Scanned by CamScanner

Name: Vaishali H Shah
Baroda (Gujarat)
Mb no: 9429196251

जिनशासन की प्रभावना हेतु वर्तमान में संचालित पाठशालाओं को कैसे सुचारु एवं सारगर्भित रूप से चलाया जाये, इस हेतु मेरा विचार और सुझाव प्रस्तुत करने जा रही हूँ।

प्राचीन समय में हर मानव श्रमणसंस्कृति के अनुसार ही अपने जीवन को बनाता था। उस समय गुरुकुल में शिक्षा दी जाती थी। हर गुरुकुल में धार्मिक शिक्षा के साथ लौकिक शिक्षा दी जाती थी, ताकि विद्यार्थी अपने आपको पाप कार्य से बचाकर सदाचार की ओर प्रवृत्त कर सके।

आज हमारे बच्चे जो पाठशाला जाते हैं उन पर ही बच्चों के संस्कार निर्माण का बड़ा कार्य सिर्फ पाठशाला की वजह से हो रहा है। आज हम देखते हैं कि वर्तमान समय में मंदिर तो बहुत बन रहे हैं। और बनने भी चाहिए। पर अगर जैन शिक्षा पर जोर नहीं दिया तो वो समय दूर नहीं मंदिर तो होंगे पर भक्त गायब हो जायेंगे। इसलिए वर्तमान समय में पाठशाला की बहुत आवश्यकता है।

जीवन में संस्कार का बड़ा महत्व है। जैसे गीली मिट्टी को जैसा झुकाया जाय वैसी झुक जाती है वैसे ही बच्चे गीली मिट्टी के समान है। संस्कार बिना बच्चों को सुविधा देना पतन का कारण है। बच्चों में डाले हुए संस्कार life insurance की तरह होते हैं जो इस जन्म में तो काम आते ही है लेकिन अगले जन्म में भी काम आते हैं।

वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए कई लोग बच्चे स्कूलों में मांसाहारी भोजन करने लगे हैं, बच्चों को अहिंसा, शाकाहार की तरफ ले जाने के लिए पाठशाला खोलना बहुत जरूरी है।

पाठशाला और इनमें दिये हुए संस्कार जीवन जीने की कला सिखाती है। मानव का प्रथम निर्माण माँ के हाथों से होता है तो दूसरा निर्माण पाठशालाओं के अध्यापक द्वारा होता है। धार्मिक पाठशालाओं में सुसंस्कार, धर्म के मूल सिद्धांत, नैतिक जीवन, शिष्टाचार की शिक्षा मिलती है। जिससे बच्चों का जीवन पथ सुगम और सरल बनता है। अपने धर्म के मूलभूत सिद्धांतों की जानकारी बिना कई बच्चे धर्म से विमुख होते जा रहे हैं। बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर जीवन में आगे बढ़ने के अवसर भी पा रहे हैं पर शांत, निर्मल, स्वच्छ, सुंदर जीवन, तनाव रहित जीवन निर्माण करने लिए पाठशाला की अति आवश्यकता है।

जिस मानव में सद्ज्ञान नहीं वह मानव नहीं पशु है सद्ज्ञान - सम्यकज्ञान को प्राप्त कराती है "संस्कारशाला" सम्यग्ज्ञान की धारा से आप्लावित व्यक्ति अपने घर को मंदिर बना देता है।

आज पाश्चात्य शिक्षा पद्धति से अर्थोन्मुखी होने से, उनका अनुकरण करने से बच्चों में परिवार, समाज राष्ट्र के प्रति सम्मान की भावना कम होती जा रही है लौकिक शिक्षा बच्चों को पुस्तकीय ज्ञान देने में तो

समर्थ है। लेकिन व्यवहार सिखाने (संस्कार सिखाने) में समर्थ नहीं। पाठशाला एक ऐसी फैक्टरी है जो अच्छे, सदाचारी और सुसंस्कारी व्यक्तित्व का निर्माण कर महत्वपूर्ण योगदान देती है। जीवन निर्माण की प्रयोगशाला है।

भावी पीढी जैन धर्म के मौलिक तत्वज्ञान से परिचित हो, प्रभावित हो इस तरह सरलता से हेतु, तर्क व दृष्टांत के साथ, तत्वज्ञान सिखाना चाहिए। इसके लिए पाठशाला के अध्यापक को बच्चों को स्टोरी और कविता के माध्यम से सरल तरीके से सिखाना चाहिए। मन वचन काया की एकाग्रता से ध्यान कर्मशुद्धि इत्यादि की शिक्षा सुगमता से प्रदान की जाए ताकी विद्यार्थी के जीवन में समता व समाधि की वृद्धि हो बच्चों को आधुनिक पद्धति यानि प्रोजेक्टर आदी का प्रयोग कर के पढाना चाहिए। बच्चों पर बोलने से ज्यादा आचरण का प्रभाव पडता है। बच्चों को स्वाध्याय, सत्संग के प्रति जोडने के लिए पाठशाला की अति आवश्यकता है बच्चों की बर्थडे हो तो उसको प्रभु अभिषेक के लिए प्रेरणा देनी चाहिए। बच्चोंको जो भी सिखाए प्यार से सिखाना चाहिए। बच्चों को साल में एक बार धार्मिक स्थल पे ले जाकर यात्रा भी करानी चाहिए। बच्चों को होमवर्क देना चाहिए। एक नोटबुक बनाकर उसे चेक भी करना चाहिए। बच्चोंको नियमित पुरस्कार भी देनी चाहिए। बच्चों को

पाठशाला एक आदर्श भवन भी होना चाहिए। जिसमें बेन्च, ब्लैकबोर्ड आदि की व्यवस्था भी होनी चाहिए। बच्चों की पाठशाला का युनिफोर्म भी होना चाहिए।

बच्चों को पाठशाला में सर्वप्रथम णमोकार मंत्र, चौबीस भगवान के नाम चिन्ह सहित, स्तुतियाँ आदि सर्वप्रथम सिखाना चाहिए।

बच्चों को श्रमण संस्कृति के संस्कार देने के लिए क्या करना चाहिए इस हेतु मेरा सुझाव निम्नानुसार है।

1 पाठशाला के भवनों एवं कमरों का नाम श्रमण संस्कृति के तीर्थंकरों, आचार्यों, मुनियों, आदर्श पुरुषों, नारियों के नाम पर रखा जाए। एवं उनके चित्र एवं परिचय लगाए ताकि उस कमरे में पढ़नेवाले उनसे परिचित हो

2 पाठशाला में सामान्य ज्ञान की पुस्तकें जिनमें तीर्थंकरों, तीर्थक्षेत्रों, आदर्श पुरुषों के जन्म निर्माण, प्रमुख घटनाओं आदि की जानकारी हो

3 प्रार्थना, विसर्जन आदि का चुनाव इस प्रकार हो ताकि श्रमण संस्कृति की भावना जागृत हो जैसे - माता इस का रक्षा करके, हे शारदे मां! दीन रात मेरे स्वामी, मेरी भावना आदि

4 साप्ताहिक बाल सभा के विषयों के चयन करके अहिंसा, शाकाहार, दशधर्म आदि विषयों पर भी भाषण, गीत, वादविवाद आदि रखा जाय.

5 शैक्षणिक भ्रमण, पिकनिक आदि अवसरों पर जैन तीर्थस्थलों का भ्रमण कराया जाय।

Scanned by CamScanner

6 जैन विद्वानों, मुनियों आदि के नगर आगमन पर पाठशालाओं में उनके प्रवचन आदि कार्यक्रम रखे जाये।

7 साल में दो बार शिक्षण शिबिर का आयोजन किया जाय और विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन जैसे चित्र-कला, भजनगीत, कहानियाँ आदि।

8 अगर बड़े बड़े शहरोंमें बच्चों को दूरसे आनेजाने में असुविधा रहती हो तो ऑयरिक्शा या वेन कीव्यवस्था भी करनी चाहिए

9 बच्चोंको आधुनिक पद्धति से डीजिटल टेकनोलोजी से पढ़ाने के लिए प्रोजेक्टर की व्यवस्था भी होनी चाहिए। जिससे बच्चों को फोटो देखकर अच्छीसे समझनेमें आसके।

हमारे यहाँ की पाठशाला की समस्या यह है कि बच्चों को स्कूल का होमवर्क ज्यादा होनेसे बच्चे पाठशाला का होमवर्क नही करते, कई बच्चेतो ओरलएक्झाम भी नही देते। उसके लिए आपका सुझाव हमें (चाहिए) बच्चों को सरल पद्धति से ज्ञान देने के लिए, बच्चों को पाठशाला के प्रति लगाव बढ़ाने के लिए हमें क्या करना चाहिए। आपकी राय (चाहिए)। अंतमें मैं यही कहूँगी की

पाठशाला सम्यग्ज्ञानरूपी अमृतका पान करानेवाली माता, मानव जीवनका मूल्य सिखानेवाली शिक्षिका मोक्षमार्ग को दिखानेवाली - दिवादांडी ~~संसार की असारता का भान करानेवाली - दूरबीन~~ नवतत्त्वों को सिखानेवाली - रत्न..... ही है।

अस्तु (जयजिनेन्द्र)